# रानी दुर्गावती के जनहित कार्यों का अध्ययन

रेखा पटेल

मध्यकालीन इतिहास में मध्य प्रदेश के जबलपुर, मंडला, दमोह, नरसिंहपुर, पन्ना, सागर आदि के भू-भाग गोंडवाना नाम से जाने जाते थे क्योंकि इन भागों में गोंड वनवासियों की सत्ता इस काल में रही थी। वर्तमान में इन्हें राजगोंड भी कहा जाता है। इसी वंश के प्रतापी शासक संग्रामशाह के पुत्र दलपति शाह के साथ वयस्क हो जाने पर दुर्गावती का विवाह उनसे हुआ था। इस समय गोंडवाना की राजधानी मंडला के समीप गढ़ा में थी। गोंडों की सत्ता के दो प्रमुख केंद्र और थे जिनमें एक सिंगौरगढ़, जबलपुर-दमोह मार्ग पर, दूसरा चौरागढ़, नरसिंहपुर जिले में है। सन् 1543 ई. में संग्रामशाह की मृत्यु के बाद दलपति शाह गोंडवाना के राज्य का उत्तराधिकारी हुआ था। रानी दुर्गावती से 1543 ई. में एक पुत्र भी हुआ जिसका नाम वीरनारायण रखा गया था। रानी दुर्गावती के सुखी जीवन में उस समय वज्रपात हुआ। जब अचानक 1548 ई. में दलपति शाह का निधन हो गया। उस समय उनका पुत्र वीरनारायण मात्र पाँच वर्ष का था वह गोंड सत्ता को अभी सँभालने के योग्य नहीं हुआ था। परंतु भाग्य की विडंबना को स्वीकार करते हुए रानी दुर्गावती ने बालक को गद्दी पर बिठाकर स्वयं सत्ता के सूत्र हाथ में ले लिये। गोंडवाना बघेलखंड और बुंदेलखंड के आंचलिक सत्ताओं के भाग तत्समय में एक-दूसरे के समीपवर्ती होते हुए आपस में जुड़े थे और एक का दूसरे पर राजनीतिक प्रभाव जरूर पड़ता था। दूसरे, इन भागों की विशेषता यह थी कि इन भागों की जनता धार्मिक आस्थाओं और मान्यताओं में आकंठ डूबी थी। वह किसी भी रूप में विजातीय धर्म की सत्ता को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं थी। आस्था और परंपरागत विश्वास से उत्पन्न हुई चेतना-शक्ति यहाँ के आम जनजीवन में सदैव रची-बसी रही थी जो सदैव मुग़ल सत्ता का विरोध करती रही थी। अबुल फजल ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। किंतु यह भी मत व्यक्त किया है कि उसकी एकमात्र भूल थी–अकबर का आधिपत्य स्वीकार न करना। अकबर के समय में उसका आधिपत्य स्वीकार न करना रानी के साहस और आत्मविश्वास का उदाहरण है। वह लिखता है कि “उसमें साहस तथा कर्तव्यपरायणता के आधारभूत तत्वों का अभाव नहीं था तथा उसने मात्र अपनी दूरदर्शिता के कारण कई महान् कार्य किए थे। उसने बाज़ बहादुर तथा मियानों से कई बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी थीं और उनमें सदा विजयी रही थी। वह बंदूक और तीर की अच्छी निशानेवाज थी और उसे शिकार का शौक था। ऐसा कहा जाता है कि जब कभी वह सुनती थी कि कोई शेर दिखाई दिया है तो उसका शिकार किए बिना वह जल तक ग्रहण नहीं करती थी। शांति परिपदों में तथा युद्ध-क्षेत्र में प्राप्त उसकी सफलताओं के संबंध में हिंदुस्तान में कई कथाएँ प्रचलित हैं। उसने अपने राज्य के विभिन्न भागों में कई लोकोपयोगी निर्माण कार्य किए थे तथा अपनी प्रजा का हृदय जीत लिया था।

रानी दुर्गावती सौभाग्य लक्ष्मी, सद्गुण संपन्न मानी जाती थीं। रानी दुर्गावती का समय अधिकांश प्रजा के हित में किए कार्यों में व्यतीत होता था। उनके काल में जगह-जगह तालाबों का निर्माण करवाया गया था। उसने गढ़ा के निकट एक सुंदर तालाब का निर्माण जिसे रानी के नाम पर ‘रानीताल’ कहा गया। उसकी

एक दासी ने निकट ही एक अन्य तालाब का निर्माण कराया जो उसके नाम पर 'चेरीताल' कहलाता है। आज उस जलाशय के स्थान पर 'चेरीताल' नामक मोहल्ला बसा है। उसके मंत्री आधार ने मिर्जापुर मार्ग पर जबलपुर से 3 मील दूर एक बड़े तालाब का निर्माण करवाया था जो अाधारताल कहलाता है तथा जिस गाँव में यह तालाब स्थित है उस गाँव का नाम भी इसी आधार पर रखा गया है। जबलपुर के आसपास इतने अधिक तालाब थे कि वह तालाबों का नगर भी कहलाता था। तालाब खोदने की उत्कृष्ट अभिरुचि भारतीय इतिहास में गोंडवाना की अनूठी विशेषता है। विंसेंट स्मिथ ने भी रानी द्वारा विभिन्न भागों में अनेक उपयोगी कार्य कर जनता का हृदय जीतने का उल्लेख किया है। नरसिंहपुर जिले के वरमान नामक स्थान पर नर्मदा के तट पर रानी द्वारा एक मंदिर बनवाया गया है जो आज रानी दुर्गावती का मंदिर कहलाता है, वहाँ अब उनके अवशेषों पर एक नया मंदिर प्राप्त हुआ है। जबलपुर, नरसिंहपुर और मंडला के सुंदर मंदिर रानी दुर्गावती की धर्मप्रियता के परिचायक हैं। रानी दुर्गावती के राज्य की जनता पूर्णतया संतुष्ट थी उसकी संपन्नता का अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि वे अपना लगान स्वर्ण मुद्राओं और हाथियों में चुकाते थे। रानी ने गढ़ा में अपने राज्य के लिये विशेष रूप से टकसाल की स्थापना की जो रानी की मृत्यु के बाद भी बहुत वर्षों तक चलती रही। राजकीय टकसाल में स्वर्ण एवं रजत मुद्राएँ ढाली जाती थीं। एक साहित्यिक परंपरा द्वारा इस बात की पुष्टि होती है कि आचार्य विट्ठलनाथ का गढ़ा में भव्य स्वागत किया गया था जहाँ उन्होंने 1562 ई. के लगभग पुष्टि मार्ग संप्रदाय पीठ की स्थापना की थी। कहा जाता है कि रानी विद्वानों को उदार संरक्षण देने के लिए भी प्रसिद्ध थी। मि. स्लीमन ने रानी दुर्गावती के संबंध में लिखा है–"इस रानी का शासन उत्तम था वह प्रजा के दुःखों एवं सुखों की कहानी स्वयं सुनती थी।" रामनगर की शिला प्रशस्ति में जयगोविंद ने रानी के महात्म्य का सुंदर निर्देशन इस प्रकार किया है–"महारानी दुर्गावती याचकों की सौभाग्य लक्ष्मी, सद्गुणों की मूर्ति एवं परम सुंदरी थी। उसका चित्त सदैव जग के कल्याण में मग्न था। पति की मृत्यु के उपरांत उसने 3 वर्षीय पुत्र वीरनारायण को राज्य पर अिधष्ठित किया था और राजकार्य स्वयं किया करती थी जिसकी प्रशंसा सर्वत्र की जाती थी। अपने त्रैलोक्य विश्रुत यश और हिमालय के समान उत्तुंग स्वर्ण मंदिरों के निर्माण द्वारा उसने पृथ्वी का तो रूप ही बदल दिया था। राज्य में बहुमूल्य रत्नों की भरमार थी, इंद्र के हाथियों के समान अनेक मस्त हाथी उसके द्वार पर झूमा करते थे। इनके द्वारा बनवाए गए मठ-मंदिर और किले आज भी इतिहास और पुरातत्व की दिशा में अमूल्य शोध-सामग्री के अक्षय स्रोत बने हुए हैं। आज इतिहास की किताबों में अकबर का नाम लिखा जरूर मिल जाता है पर हृदय के इतिहास में अपने अंचल के लिये मिटने वाली दुर्गावती का ही नाम लिखा मिलता है। रानी दुर्गावती क्षेत्रीय स्तर पर गाँव-गाँव में जानी जाती हैं। वह लोकगीतों में विराजती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनका नाम जीवित है। वह देश के साथ प्रदेश की शान और गौरव की अनुभूति हैं जो स्वाभिमान के लिये मुगल सत्ता से टकरा गई थीं। उन्होंने नहीं माना कि वह एक महिला हैं। उन्होंने केवल सैनिक धर्म, राष्ट्रधर्म और स्वाभिमान के धर्म को माना था। गोंडवाना के प्रादेशिक इतिहास में रानी दुर्गावती का नाम अमर है।

संदर्भ ग्रंथ

•स्वराज संदर्भ, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल (म.प्र.), 15 जून 2017, पृ. 1

•जबलपुर गजेटियर, जिला गजेटियर विभाग, मध्य प्रदेश, भोपाल, 1969, पृ. 78, जर्नल मध्य प्रदेश इतिहास परिषद्, 2003, पृ 107

•वही, पृ. 107

•जबलपुर गजेटियर, अतीत दर्शन, डॉ. महेश चंद्र चौबे, मदन मोहन उपाध्याय, इन्टेक जबलपुर, 2003, पृ. 44

•जर्नल, मध्य प्रदेश इतिहास परिषद्, 2003, पृ. 107

•जबलपुर गजेटियर, जिला गजेटियर विभाग, मध्य प्रदेश, भोपाल, 1969 पृ. 78

•जगमोहन स्मृति ग्रंथ, (मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व परंपरा, श्री विजय कुमार सिंघई), 1968, पृ. 326, स्वराज संदर्भ, स्वराज संस्थान संचालनालय, मध्य प्रदेश, भोपाल, 15 जून 2017, पृ. 2

डॉ. रेखा पटेल

इतिहास विभाग

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)